Indian Association of Pediatric Surgeons

Patient Information Sheet

BLEEDING PER RECTUM

मलाशय से रक्तस्राव

Concept, Text & Photographs Courtesy :

Dr. Vijai Upadhyay,

Additional Professor, Pediatric Surgery, SGPGIMS, Lucknow.

Hindi Translation by:

Dr. Abhishek Tiwari, Asst. Prof., Pediatric Surgery, Netaji Subhash Chandra Bose Govt. Medical College, Jabalpur

Dr. Vikesh Agrawal, Professor, Pediatric Surgery, Netaji Subhash Chandra Bose Govt. Medical College, Jabalpur

Designed and formatted by :

Dr. Veereshwar Bhatnagar,

Former Professor & Head, Pediatric Surgery, AIIMS, New Delhi, Currently Professor of Pediatric Surgery & Dean Research, School of Medical Sciences & Research, Sharda University, Greater Noida, UP.

Published by :

Dr. Amar Shah, Consultant Pediatric Surgeon, Amardeep Multispeciality Children Hospital, Ahmedabad &

Professor Ravi Kanojia , PGIMER, Chandigarh

for & on behalf of the Indian Association of Pediatric Surgeons

मलाशय से रक्तस्राव क्या है?

मलाशय से रक्तस्राव, जैसा कि नाम से पता चलता है, मल के मार्ग से रक्त का निकलना है। इसमें गुदा से निकलने वाले ताजा रक्त को या तो एक प्रवाह के रूप में, बूंदों में या सिर्फ मल के ऊपर लगा हुआ रक्त शामिल है। जब रक्त मल के साथ मिलकर निकलता है तो इसे हेमटोचेजिया कहा जाता है।

इस समस्या का क्या कारण है और यह कितना कॉमन है?

यह एक काफी कॉमन समस्या है लेकिन अधिकतर यह नज़र अंदाज़ की जाती है। विभिन्न आयु समूहों में रक्तस्राव के विभिन्न कारण होते हैं। नवजात शिशुओं या शिशुओं में फिशर सबसे आम हैं; वीनिंग के समय इंट्युससेप्शन भी काफी कॉमन है| टॉडलर्स और बड़े बच्चों में आँतों के पॉलिप मलाशय से रक्तस्राव का कारन हो सकते हैं| बड़े बच्चों और किशोरों में सूजन आंत्र रोग (इन्फ्लामेट्री बोवेल डिसीस जैसे अल्सरेटिव कोलाइटिस) या कुछ सिंड्रोम जिसमे आँतों के पॉलिप एवं कैंसर , वंशानुगत बीमारी या रक्त नलिकाओं का गुच्छा (वैस्कुलर माल्फोर्मेशन) रक्तस्राव के कारण हो सकते हैं।

लक्षण क्या हैं ?

रक्तस्राव बहुत स्पष्ट होता है; यह चमकदार लाल या गहरा लाल या काला टैरी मल हो सकता है। अंडरगारमेंट्स को खून से भीग सकते है। जुड़े लक्षणों में कब्ज शामिल हो सकता है और शौच के दौरान ताकत लगाने की समस्या होती है, एवं कठोर मल होता है| पेट में दर्द और लाल जेली की तरह मल

होना इंट्युससेप्शन में देखा जाता है, जबकि लकीर या बूंदों के साथ या मल गुजरते समय रक्त, स्थानीय दर्द, स्थानीय कारणों जैसे एनल फिशर का संकेत है। दर्द रहित रक्तस्राव पॉलीप्स या संवहनी विकृतियों (वैस्कुलर माल्फोर्मेशन) का संकेत दे सकता है।

अपने चिकित्सक को कब दिखाना है? जब भी कोई बच्चा संबंधित लक्षणों के साथ या उसके बिना मल में रक्त पास करता है, तो डॉक्टर से परामर्श किया जाना चाहिए।_ इसका निदान (डायग्नोसिस) कैसे किया जाता है?

रक्त का मार्ग स्पष्ट है। रक्तस्राव के कारण का निदान (डायग्नोसिस) करना आवश्यक है:

1. इतिहास और शारीरिक परीक्षा के आधार पर कारणों के स्पेक्ट्रम की एक अच्छी समझ - यह डॉक्टर को जांच के सही साधनों को चुनने में मदद करता है।
2. एक अच्छी तरह से प्रकाशित कमरे में एक अच्छी शारीरिक परीक्षा गुदा विदर (एनल फिशर) का निदान करने के लिए पर्याप्त है।
3. प्रति गुदा परीक्षा (पर एनल एक्जामिनेशन)- मलाशय के मार्ग में उंगली डालकर गुदा पॉलीप का निदान किया जा सकता है।
4. प्रोक्टोसिग्मॉइडोस्कोपी या कोलोनोस्कोपी - एक एंडोस्कोप के साथ किया जाता है - यह आवश्यक है जब घाव या समस्या एक से अधिक हो या उंगली की पहुंच से परे होने का संदेह होता है।
5. एंडोस्कोपी उपलब्ध न हो तो ये समस्याएं रिअल टाइम डबल कंट्रास्ट एनीमा में भी देखी जा सकती हैं।
6. अल्ट्रासाउंड स्कैन – पेट के अन्दर की बीमारियाँ जैसे इंट्युससेप्शन या पेट के अन्दर की गांठों जैसी स्थितियों का निदान करने के लिए बहुत मूल्यवान हैं।
7. मौखिक कंट्रास्ट के साथ सीटी स्कैन सिंड्रोमिक पॉलीपोसिस में उपयोगी हैं।

8. एंजियोग्राफी या न्यूक्लिअर ब्लड पूल स्कैन, सक्रिय रक्तस्राव स्थलों की पहचान कर सकते हैं, खासकर जब संवहनी विकृति **)वैस्कुलर माल्फोर्मेशन(** का संदेह होता है।

9. जांच की श्रृंखला में नवीनतम कैप्सूल एंडोस्कोपी है। यह एक छोटा कैप्सूल है - एक दवा कैप्सूल की तरह - जो एक कैमरा से लैस है। जब निगल लिया जाता है तो यह पूरे आँतों से होकर गुजरता है और प्रतिमाओं (इमेजेज़) को भरता रहता है। यह मल से पुनर्प्राप्त किया जाता है और छवियों (इमेजेज़) को पुनः प्राप्त किया जाता है। यह महंगा है लेकिन आंत में बिखरे हुए कई घावों में बहुत उपयोगी है।

क्या उपचार उपलब्ध हैं?

उपचार का उद्देश्य रक्तस्राव के स्रोत को पहचानना एवं उसे समाप्त करना है।विभिन्न क्रियात्मक घावों के लिए विभिन्न तरीकों की आवश्यकता होती है। मोटे तौर पर, रक्तस्राव के सभी आंतरिक कारणों का उपचार एंडोस्कोपिक साधनों (लैप्रोस्कोपी सहित) या ओपन सर्जरी द्वारा किया जाता है।

क्या सर्जरी के लिए कोई विकल्प हैं?

सतह के घावों जैसे कि फिशर को किसी भी सर्जिकल प्रक्रिया की आवश्यकता नहीं होती है। उन्हें स्थानीय उपायों से प्रबंधित किया जा सकता है जो दर्द से राहत देते हैं और मल को नरम रखते हैं। फ्लुओरोस्कोपिक मार्गदर्शन में गैस (वायवीय) या द्रव (हाइड्रोस्टैटिक) का उपयोग करके रेडियोलॉजी विभाग में इंट्युससेप्शन का भी उपचार किया जा सकता है। ऑपरेशन में क्या शामिल है?चूंकि रक्तस्राव के कारण इतना विभिन्न हो सकते है, विभिन्न घावों के लिए विशिष्ट ऑपरेटिव प्रक्रियाओं की आवश्यकता होटी है। सामान्य तौर पर, अधिकांश आंतरिक घावों को सर्जरी द्वारा निकालने की आवश्यकता होती है (इनमें गांठें, पॉलीप्स, मेकेल्स डायवर्टीकुलम, वैस्कुलर माल्फोर्मेशन आदि), लेकिन

कुछ बीमारियों को प्रारम्भिक चरण में ही ठीक किया जा सकता है। इन्फ्लामेट्री बोवेल डिसीस या दुर्लभ कैंसर में आंत के बड़े हिस्से को निकालने की या स्तोमा (मल का रास्ता पेट के बहार से निकालना) की आवश्यकता हो सकती है।

ऑपरेशन के बाद संभावित जटिलतायें (कॉम्प्लिकेशन) क्या होती है / ऑपरेशन के बाद क्या होता है?

मलाशय से रक्तस्राव का उपचार आम तौर पर सुरक्षित है और रिकवरी (आराम लगना, ठीक होना) लगभग तत्काल है। एंडोस्कोपिक प्रक्रियाओं के दौरान आंत में छिद्र हो सकता है। लम्बे समय तक एनीमिया और कुपोषण के कारण कुछ मामलों में, बड़ी सर्जिकल प्रक्रियाओं के साथ घाव में संक्रमण / टाँके टूटना, घाव का खुल जाना संभव है। कुछ सिंड्रोमिक पॉलीपोसिस में कुछ पॉलीप्स के कैंसर में परिवर्तित होने का खतरा होता है। इन बच्चों का दृष्टिकोण या भविष्य क्या है?आउटलुक अंतर्निहित कारण पर निर्भर करता है। सिंगल रेक्टल या कोलोनिक पॉलीप, मेकेल्स डायवर्टीकुलम जैसे रोग पूरी तरह से ठीक हो जाते हैं। पॉलीपोसिस कोलाई और संवहनी विकृति (वैस्कुलर माल्फोर्मेशन) जैसे रोग को दवाओं से प्रबंधित किया जा सकता है लेकिन अंततः ऑपरेशन की आवश्यकता होगी; पुनरावृत्ति की संभावना है और आजीवन निगरानी की जरूरत है। कुछ रोग जैसे क्रोन्स रोग, अल्सरेटिव कोलाइटिस में वानिंग और वैक्सिंग प्रकार की बीमारी होती है और आजीवन निगरानी की आवश्यकता होती है।